Review Of Research
Vol. 3 | Issue. 8 | May. 2014
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
ISSN:-2249-894X
Available online at www.ror.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

जमानियां तहसील, गाजीपुर जनपद (उ.प्र.) में सेवा केन्द्रों का क्षेत्रीय वितरण प्रतिरूप

अजीत कुमार यादव

प्राचार्य, गुरूकुल महाविद्यालय पत्थलगांव जिला–जशपुर (छ.ग.)

सारांश :

प्रस्तुत शोध प्रपत्र जमानियां तहसील में सेवा केन्द्रों के वितरण प्रतिरूप के अध्ययन से संबंधित है। अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या एवं सेवा केन्द्रों के वितरण में धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है। यहां पदानुक्रम वर्ग के बड़े आकार वाले सेवा केन्द्र नगरीय क्षेत्रों में सामाजिक–आर्थिक सेवाओं के विकास के कारण अधिक तथा ग्रामीण क्षेत्रों में जहां इन सेवाओं का कम विकास हुआ है वहां सेवा केन्द्र छोटे पाये जाते हैं। सेवा केन्द्र क्षेत्रीय विकास में एक नया आयाम प्रस्तुत करते हैं, जिनके वितरण में स्थानीय कारकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। क्षेत्र मध्य गंगा मैदान के उपजाऊ जलोढ़ मैदान में स्थित है। यहां सेवा केन्द्रों के वितरण हेतु अनुकूल दषाएं उपलब्ध हैं। क्षेत्र के उत्तरी भाग में सघन एवं अन्य क्षेत्रों में विरल जनसंख्या का संकेन्द्रण पाया जाता है।

प्रस्तावना :

सेवा केन्द्र का तात्पर्य ऐसे केन्द्र से हैं जो ग्रामीण अधिवासों को विभिन्न प्रकार की सेवाएं प्रदान करते हैं लेकिन अधिवासीय वितरण तंत्र में सभी मानव अधिवास सेवा केन्द्र नहीं होते हैं। बल्कि विभिन्न भौतिक सामाजिक– आर्थिक एवं धार्मिक कारणों से कुछ अधिवासों की स्थिति केन्द्रीय जाती है। वहां विभिन्न कारणों से क्षेत्रीय जनसंख्या का समूहन होने लगता है। परिणामस्वरूप ऐसे केन्द्रीय अधिवासों पर सेवाओं एवं कार्यों का केन्द्रीयकरण होने से स्थानीय जनसंख्या उनक कार्यों एवं सेवाओं का लाभ उठाने लगती है। परिवहन साधनों के विकसित होने पर इन केन्द्रीय अधिवासों के क्षेत्र में क्षैतिज संपर्क एवं वाहय क्षेत्रों से उर्ध्वाधर सम्पर्क बढ़ने लगता है। कालान्तर में इसी प्रक्रिया से ये केन्द्र एक वितरण तंत्र के अंग बन जाते है, जिससे क्षेत्र में इस प्रकार के केन्द्रों का पदानुक्रम निर्मित हो जाता है, जिसमें छोटे केन्द्र बड़े केन्द्रों पर निर्भर हो जाते हैं **(यादव, 2013)**। सेवा केन्द्र क्षेत्रीय महत्व के ऐसे केन्द्र होते हैं, जो सेवायें एवं सुविधायें क्षेत्र के लोगों को प्रदान करते है। वे परिवहन मार्गो द्वारा आपस में जुड़े होते हैं। सेवा केन्द्र प्राथमिक रूप से समीपवर्ती क्षेत्र की सेवा करने हेतु जन्म लेते हैं। अतः इन सेवा केन्द्रों को ग्रामीण सेवा केन्द्र भी कहते हैं। ये ग्रामीण क्षेत्रों को सेवायें एवं सुविधायें प्रदान करने के लिये सदैव तत्पर रहते है तथा उनके बदले में अनेक प्राथमिक उत्पादों को तैयार माल में बदलकर अन्य दूरस्थ स्थानों पर भेजते हैं। सेवा केन्द्र समीपवर्ती कितनी दूर तक के क्षेत्रों पर अपना प्रभाव डालता है। यह उसके कार्यिक स्तर एवं आकार पर निर्भर करता हैं। यदि सेवा केन्द्र छोटा है तो वह कम सुविधायें रखता है तथा उसका क्षेत्र कम विस्तृत होगा, साथ ही वह अनेक उच्च सेवाओं के लिये बड़े सेवा केन्द्रों पर निर्भर होगा। ये सेवा केन्द्र अपने पदानुक्रमिक आकार के अनुसार ही क्षेत्र में सेवाओं एवं सुविधाओं को प्रदान करके क्षेत्रीय विकास का आधारीय ढ़ाचा तैयार करते हैं **(यादव, 2014)**।

विधितंत्र– जमानियां तहसील में चयनित सेवा केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप निकटतम पड़ोसी बिन्दु विष्लेषण विधि द्वारा ज्ञात किया गया है। सेवा केन्द्रों का घनत्व एवं परिकल्पित दूरी सांख्यिकी विधि द्वारा ज्ञात करके यादृच्छिक वितरण उनके मूल्य के अनुरूप सेवा केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप निरूपित किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र– जमानियां तहसील पूर्वी उत्तर प्रदेष गाजीपुर जनपद के दक्षिणी भाग में 25^0 19′ से 25^0 36′ उत्तरी अक्षांष एवं $83^0$28′ से 83^0 47′ पूर्वी देषान्तर के मध्य 733.06 वर्ग क्षेत्र में स्थित है। यह क्षेत्र उत्तर–पूर्व में मुहम्मदाबाद तहसील से,

उत्तर–पष्चिम में गाजीपुर तहसील से, दक्षिण एवं दक्षिण– पष्चिम में बिहार राज्य के बक्सर जनपद से एवं दक्षिण–पष्चिम में चन्दौली जनपद से घिरा हुआ है। प्राकृतिक दृष्टिकोण से जमानियां तहसील की उत्तरी–पष्चिम सीमा गंगा नदी द्वारा एवं दक्षिणी सीमा कर्मनाषा नदी द्वारा निर्धारित होती है। उत्तर से दक्षिण की लम्बाई 33 किमी. एवं पूर्व से पष्चिम की ओर चौड़ाई 36 किमी. है। प्रषासनिक दृष्टिकोण से गाजीपुर तहसील चार विकासखण्डों, 29 न्याय पंचायतों एवं 383 ग्रामों में विभक्त है। यह क्षेत्र समुद्रतल से 71 मीटर ऊचाई पर स्थित है। इसका ढ़ाल दक्षिण–पष्चिम एवं उत्तर–पूर्व की ओर है।

सेवा केन्द्र क्षेत्रीय महत्व के ऐसे स्थल होते हैं जो आधुनिकीकरण तथा निम्न स्तर के अधिवासों के सान्द्रण को जन्म देने वाले सामाजिक–आर्थिक नीतियों के रूप में उपयोग किये जाते हैं। किसी भी क्षेत्र के सामाजिक– आर्थिक एवं क्षेत्रीय विकास में सेवा केन्द्र ध्रुवीय भूमिका निभाते हैं। क्षेत्रीय नियोजन के विभिन्न उपागमों में सेवा केन्द्र नियोजन उपागम सर्वाधिक उपयुक्त है। सेवा केन्द्र आर्थिक क्रियाओं व सामाजिक सुविधाओं के विकेन्द्रीकरण का आधारीय ढ़ांचा तो प्रस्तुत ही करता है साथ ही स्थानीय जनसंख्या के लिए सामाजिक सुविधाओं के संकेन्द्रण हेतु उपयुक्त स्थलों का मार्ग प्रशस्त करता है। यह विकास के अभाव में अव्यवस्थित प्रादेशिक अर्थव्यवस्थाओं की समस्याओं को सुलझाने के साथ–साथ क्षेत्र के स्थानीय आर्थिक परिवर्तन में प्रभावी यन्त्र के रूप में कार्य करता है। किसी भी क्षेत्र में सेवा केन्द्रों की अवस्थिति वितरण प्रतिरूप के अध्ययन तथा विश्लेषण में दो तथ्यों पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है।

अवस्थित विश्लेषण–सेवा केन्द्र धरातल पर कहां–कहां स्थित हैं एवं उनकी क्षेत्रीय सम्बद्वता किस प्रकार की है।

वितरण प्रतिरूप– सेवा केन्द्रों के अवस्थिति विश्लेषण से जो स्वरूप उभर कर सामने आता है, उसे वितरण प्रतिरूप कहते हैं। वितरण का यह प्रतिरूप विरल, सघन अथवा यादृच्छिक हो सकता है। सेवा केन्द्रों का धरातल पर यथार्थ स्थिति जन्य प्रारूप का बोध वितरण प्रतिरूप कराता है।

मानव अधिवासों का वितरण प्रतिरूप स्थानीय कारकों से नियंत्रित होता हैं, जो भूगोलवेत्ताओं के अध्ययन का प्रमुख विषय वस्तु रहा है, जिनके द्वारा विभिन्न सिद्वान्तों व संकल्पनाओं का प्रतिपादन किया गया। **गालफिन (1918)** के अनुसार सेवा केन्द्र त्रैज्य वृत्तीय क्रम में वितरित होते है, जिसमें उच्च कोटि के सेवा केन्द्रों के सेवा क्षेत्र निम्न कोटि के सेवा केन्द्रों के सेवा क्षेत्र की अपेक्षा बड़े वृत्तखण्डों द्वारा प्रदर्शित होगें। इसमें 6 सेवा केन्द्रों के लिए 6 वृत्त बराबर दूरी पर एक दूसरे पर अघ्यारोपित होते हुये बनेगें। अध्यारोपण के कारण सेवा केन्द्रों के नियमित वितरण के लिए ये वृत्त खण्ड एक आदर्श प्रस्तुत करने में असफल रहे हैं। **किस्ट्रालर** ने 1933 में दक्षिणी जर्मनी के अधिवासों के स्थानीय विशेषताओं के विश्लेषण हेतु अपने केन्द्रस्थल सिद्धान्त का प्रतिपादन किया तथा अन्तराल एवं अघ्यारोपण की समस्या को दूर करने के लिए वृत्तखण्डों के स्थान पर षष्टभुजाकार प्रदर्श द्वारा सभी केन्द्रस्थल अपने सेवा क्षेत्र में वस्तुए एवं सेवायें समान रूप से वितरित करता है तथा विभिन्न केन्द्रों के मध्य प्रतिस्पर्द्धा की संम्भावना को समाप्त कर देता है। विपणन सिद्धान्त (K-3) के अनुसार केन्द्र के बीच की दूरी $\sqrt{3}$ के नियम से बढ़ती है। इनके अनुसार वृहद आकार वाले केन्द्रस्थलों की संख्या कम एवं दूर–दूर स्थित होगें तथा छोटे आकार वाले केन्द्रस्थलों के आकार की स्थिति इसके विपरीत होगी। इस प्रक्रिया में विभिन्न पदानुक्रम वर्ग के केन्द्रों का क्षेत्रीय वितरण प्रतिरूप मानव अधिवासों के सन्दर्भ में समय एवं दूरी को ध्यान में रखकर होना चाहिए। इस सन्दर्भ में **मिश्रा** ने 1983 में वृद्धि केन्द्र (Growth Foci) की संकल्पना विकसित किया तथा स्पष्ट किया है कि विभिन्न पदानुक्रमिक वर्ग के वृद्धि केन्द्र क्षेत्र के सन्दर्भ में समाजिक–आर्थिक रूपान्तरण के केन्द्र बन सकते हैं। भारतीय संदर्भ में इन्होंने 4 वृद्धि केन्द्र को स्पष्ट किया है। (I) स्थानीय स्तर पर सेवा केन्द्र (II) उप क्षेत्रीय स्तर पर विकास बिन्दु (III) क्षेत्रीय स्तर पर विकास केन्द्र (IV) राष्ट्रीय स्तर पर विकास ध्रुव। पाण्डेय ने 1972 में गंगा–गोमती द्वाव में मानव अधिवासों का वितरण सामाजिक–आर्थिक विकास के संदर्भ में वितरण प्रस्तुत किया है।

सेवा केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप– किसी भी क्षेत्र में सेवा केन्द्रों के वितरण प्रतिरूप का अध्ययन भूगोल का एक महत्वपूर्ण विषय है। सेवा केन्द्रों के वितरण से उनके तन्त्र का ज्ञान होता है तथा क्षेत्र विशेष के भावी विकास के लिए एक योजना के निर्धारण के साथ ही उसका यर्थाथ रूप भी परिलक्षित होता है। अतः यह आवश्यक है कि क्षेत्र में सेवा केन्द्रों के वितरण प्रतिरूप के अध्ययन द्वारा पड़ने वाले प्रभावों का आंकलन सरलता से हो जाता है।

निकटतम पड़ोसी बिन्दु विश्लेषण–जमानियां तहसील में सेवा केन्द्रों के स्थानिक वितरण प्रतिरूप के निर्धारण के लिए क्लार्क एवं इवांस द्वारा प्रतिपादित निकटतम पड़ोसी बिन्दु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है। इस विधि में सेवा केन्द्रों को निकटतम स्थित केन्द्र से सीधी रेखाओं द्वारा मिला दिया गया है (चित्र संख्या 1.1A)।

Review Of Research
Vol. 3 | Issue. 8 | May. 2014
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
ISSN:-2249-894X Available online at www.ror.isrj.net

अवस्थिति वितरण प्रतिरुप– सेवा केन्द्रों का अवस्थितिक वितरण प्रतिरूप क्षेत्र में उनकी सापेक्षिक अवस्थिति को व्यक्त करता है। सेवा केन्द्र की स्थिति नगरीय हो या ग्रामीण हो, उनके वितरण का अध्ययन सांख्यिकीय विधि से अधिक उपयोगी माना जाता है। क्षेत्र में सेवा केन्द्रों के वितरण प्रतिरूप को दर्शाने के लिए निकटतम पड़ोसी बिन्दु दूरी का उपयोग किया गया है। जमानियां तहसील का कुल क्षेत्रफल 733.06 वर्ग किमी. है, जिसमें कुल चयनित सेवा केन्द्रों की संख्या 21 है। क्षेत्र में सेवा केन्द्रों का घनत्व एवं परिकल्पित दूरी का आकलन मैथर के सूत्र के आधार पर ज्ञात कर तालिका संख्या 1.1 में प्रस्तुत किया गया है।

सूत्र :–
d = A/D
d = सेवा केन्द्रों का घनत्व
A = कुल क्षेत्रफल
D = क्षेत्र में सेवा केन्द्रों की संख्या

क्षेत्र में सेवा केन्द्रों का औसत सेवित क्षेत्र का घनत्व 34.91 वर्ग किमी है। सेवा केन्द्रों का सर्वाधिक सेवित क्षेत्र का घनत्व जमानियां विकासखण्ड में 40.61 वर्ग किमी एवं सबसे कम सेवित क्षेत्र का घनत्व भदौरा विकासखण्ड में 30.37 वर्ग किमी है।

सेवा केन्द्रों की परिकल्पित दूरी (किमी. में)– क्षेत्र में स्थित सेवा केन्द्रों की परिकल्पित दूरी का आंकलन मैथर के सूत्र के आधार पर किया गया है।

सूत्र :–
$D = 1.0746\sqrt{A/N}$
D = परिकल्पित दूरी
A = कुल क्षेत्रफल
N = सेवा केन्द्रों की संख्या

तालिका संख्या 1.1
जमानियां तहसील में सेवा केन्द्रों का सेवित क्षेत्र एवं परिकल्पित दूरी

क्र.	विकासखण्डों का नाम	क्षेत्रफल (किमी.में)	सेवा केन्द्रों की संख्या	सेवा केन्द्रों का सेवित क्षेत्र वर्ग किमी. में	परिकल्पित दूरी किमी. में	वितरण की दशायें
1.	जमानियां	284.27	7	40.61	6.85	विरल
2.	रेवतीपुर	236.20	7	33.74	6.24	विरल
3.	भदौरा	212.59	7	30.37	5.92	सघन
औसत योग		**733.06**	**21**	**34.91**	**6.35**	**विरल**

तालिका संख्या 1.1 एवं चित्र संख्या 1.1 B से स्पष्ट है कि क्षेत्र में सेवा केन्द्रों के बीच की औसत परिकल्पित दूरी 6.35 किमी. है। सबसे अधिक परिकल्पित दूरी जमानियां विकासखण्ड में 6.85 किमी. एवं सबसे कम भदौरा विकासखण्ड में 5.92 किमी. है। यदि इन सेवा केन्द्रों के वितरण को देखे तो स्पष्ट होता है कि क्षेत्र में अवस्थिति का वितरण प्रतिरुप दो प्रकार का है–

(i) **सघन वितरण**– सेवा केन्द्रों का सघन वितरण प्रतिरुप भदौरा विकासखण्ड में पाया जाता है, जिसकी स्थिति दक्षिणी भाग में है। क्षेत्र में सेवा केन्द्रों के विकास के लिए अनुकूल भौगोलिक एवं सास्कृतिक दशायें विद्यमान हैं। क्षेत्र के 33.33% सेवा केन्द्र स्थित है, जिनकी परिकल्पित दूरी 5.92 किमी. है, जो क्षेत्र के औसत वितरण से कम है। यहां सामाजिक–आर्थिक सुविधाओं की प्रधानता सेवा केन्द्रों के विकास में सहायक है।

Review Of Research
Vol. 3 | Issue. 8 | May. 2014
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
ISSN:-2249-894X
Available online at www.ror.isrj.net

(ii) **विरल वितरण**– सेवा केन्द्रों का विरल वितरण प्रतिरुप रेवतीपुर एवं जमानियां विकासखण्ड में पाया जाता है, जिसकी स्थिति दक्षिणी–पष्चिमी एवं उत्तरी भाग में है। क्षेत्र के 66.67% सेवा केन्द्र एवं परिकल्पित दूरी क्रमशः 6.24 एवं 6.85 किमी. है। क्षेत्र का यह भाग सघन सेवा केन्द्रों के विकास के लिए बाधक हैं क्योंकि यहां ग्रामीण अधिवास दूर–दूर स्थित है जिसके कारण बड़े सेवा केन्द्रों का विस्तार पाया जाता है।

प्रकीर्णन विश्लेषण– प्रकीर्णन विश्लेषण में निकटतम पड़ोसी बिन्दु विश्लेषण विधि का प्रयोग सर्वप्रथम क्लार्क एवं ईवांश (1954) ने किया है। क्षेत्र में सेवा केन्द्रों के निकटतम पड़ोसी बिन्दु विष्लेषण सूचकांक ज्ञात करने के लिये डेसी एवं किंग(1962) द्वारा प्रतिपादित सूत्र का उपयोग किया गया है, जो इस प्रकार है।

सूत्रः–

$RN = D/0.50 \sqrt{A/N}$

जहां पर RN = निकटम पड़ोसी सूचकांक
D = निकटतम पड़ोसी केन्द्र से औसत दूरी
A = सम्पूर्ण क्षेत्रफल
N = कुल केन्द्रों की संख्या

यादृच्छिक संकल्पना– यादृच्छिक संकल्पना का अध्ययन निकटतम पडोसी बिन्दु विश्लेषण का प्रमुख विषय है। यदि किसी क्षेत्र में बिन्दुओं का वितरण अनियमित रुप से दिखाया जाय तो उसे यादृच्छिक वितरण कहते हैं। किन्तु यह आवष्यक नहीं है कि सभी प्रकार के वितरण यादृच्छिक ही हो। अतः इसके लिए RN मूल्य की परख करते हैं, जिससे ज्ञात होता है कि कोई भी मूल्य यादृच्छिक वितरण से कितना साम्य या विचलन रखता है। अतः निकटतम पड़ोसी दूरियों के माध्य तथा क्षेत्रफल की तुलना से प्राप्त मूल्य को निकटतम पडोसी स्थिरांक या मूल्य कहा जाता है। निकटतम पड़ोसी दूरियों के माध्य एवं क्षेत्रफल एक मापक प्रणाली में होना आवष्यक है। यदि किसी वितरण में यादृच्छिक वितरण नहीं है, तो इसका तात्पर्य यह होगा कि या तो वह यादृच्छ से कम या पूंजीभूत वितरण होगा। इस प्रकार यह वितरण निम्न प्रकार का हो सकता है। निकटतम पडोसी स्थिरांक (RN मूल्य) के सम्बन्ध मुख्य तथ्य निम्नवत है–

(i) RN मूल्य 0 से 2.15 तक हो सकता है। यदि RN मूल्य 1.0 आता है तो वह वितरण यादृच्छिक वितरण की प्रत्याशित दशा के बिल्कुल अनुरूप है। यदि RN मूल्य 1.00 के जितना सन्निकट होगा यादृच्छिक वितरण की मात्रा उतनी ही अधिक होगी।

(ii) यदि RN मूल्य 0.00 है, तो ऐसी दशा में बिन्दुओं का वितरण पूंजीभूत होगा और सभी बिन्दु एक ही केन्द्र में केन्द्रित होगें।

(iii) यदि RN मूल्य 2.15 आता है, तो ऐसी दशा में बिन्दुओं बिन्दु का वितरण सम होगा, क्योंकि विचलन जितना ही कम होगा, सेवा केन्द्रों का वितरण उतना ही नियमित होगा तथा विचलन जितना ही अधिक होगा एवं सेवा केन्द्रों का वितरण उतना ही अनियमित होगा।

सेवा केन्द्रों का स्थानिक वितरण प्रतिरूप मात्र उसके सरचना व्यवस्था को ही प्रकट नहीं करता वरन् क्षेत्र के भू–वैन्यासिक संगठन के आधार को भी स्पष्ट करता है। सेवा केन्द्र अपने चतुर्दिक विस्तृत सेवित क्षेत्र की ऊपज होते हैं, जहां वह अपनी वस्तुओं एवं सेवाओं के आदान–प्रदान के माध्यम से सम्पूर्ण क्षेत्र की सामाजिक–आर्थिक क्रियाओं को नियन्त्रित करने लगते है। इस प्रकार सेवा केन्द्र ग्रामीण विकास के क्रियाकलाप की धुरी होने के कारण विकास कार्यों की धुरी के रूप में कार्य करते हैं। अतः इनके सुव्यवस्थित वितरण से ही समन्वित ग्रामीण विकास संभव होता है। इसके अतिरिक्त एक ओर जहां क्षेत्र में उनके गुम्फन का ज्ञापन होता है, तो दूसरी ओर उस क्षेत्र के भावी विकास योजना के निर्धारण में सेवा केन्द्रों की जो संकल्पना है, वह यथार्थ रूप में उजागर होता है। क्षेत्र में सेवा केन्द्रों के निकटतम दूरियों का मापन करके डेसी एवं किंग की विधि द्वारा उनके वितरण का विश्लेषण (RN मूल्य) कर तालिका संख्या 1.2 में प्रस्तुत किया गया है।

Review Of Research
Vol. 3 | Issue. 8 | May. 2014
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
ISSN:-2249-894X
Available online at www.ror.isrj.net

तालिका संख्या 1.2
जमानियां तहसील में सेवा केन्द्रों का वितरण विश्लेषण

क्र.	विकासखण्डों का नाम	क्षेत्रफल (किमी.में)	सेवा केन्द्रों की संख्या	सेवा केन्द्रों की दूरी किमी. में	सेवा केन्द्रों की औसत दूरी किमी.	RN मूल्य	प्रकीर्णन
1.	जमानियां	284.27	7	23.70	3.39	1.21	2
2.	रेवतीपुर	236.20	7	14.40	2.06	0.71	1
3.	भदौरा	212.59	7	22.10	3.16	1.14	2
औसत योग		**733.06**	**21**	**20.07**	**2.87**	**0.97**	**2**

तालिका संख्या 1.2 एवं चित्र संख्या 1.1C से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र का औसत RN मूल्य 0.97 है, जो यादृच्छिक मूल्य (1.00) से कम है। अतः इसे यादृच्छिक मूल्य की श्रेणी में रखा जा सकता है एवं इसे नियमित प्रकार का वितरण कहा जा सकता है। अध्ययन की सरलता के लिए दो वर्गो में विभक्त किया गया है–

(I) प्रथम वर्ग में क्षेत्र का एक विकासखण्ड रेवतीपुर सम्मिलित है, जिसका RN मूल्य मूल्य 0.71 है। यह वितरण यादृच्छिक है इस वर्ग का कुल क्षेत्रफल 236.20 वर्ग कि.मी. एवं सेवा केन्दों की संख्या 07 है। इस वर्ग के प्रमुख सेवा केन्द्र रेवतीपुर, नवली, सुहवल, युवराजपुर एवं गोहनाविषुनपुर आदि हैं। इन सभी सेवा केन्द्रों पर जनसंख्या आकार के अनुसार सामाजिक–आर्थिक एवं प्रषासनिक सेवाएं पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं।

(II) द्वितीय वर्ग में क्षेत्र के दो विकासखण्ड भदौरा एवं जमानियां सम्मिलित है, जिसका RN मूल्य क्रमशः 1.14 एवं 1.21 है। क्षेत्र के इस वर्ग का कुल क्षेत्रफल 496.86 वर्ग कि.मी. है, जिसमें 14 सेवा केन्द्र है। इस वर्ग के प्रमुख सेवा केन्द्र भदौरा, बेटाबर, पचोखर, दिलदारनगर, वारा, गहमर, सेवराई, उसिया एवं जमानियां आदि है।

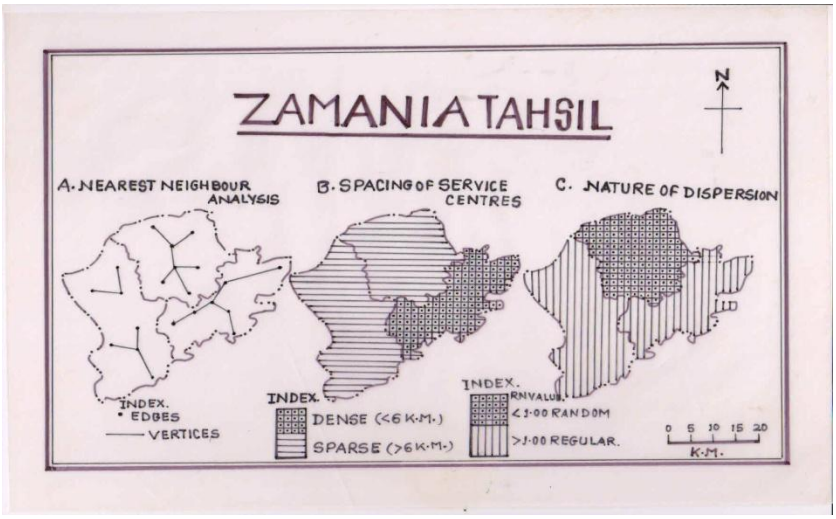

FIG-1.1

स्पष्ट है कि जमानियां तहसील में सेवा केन्द्रों का सेवित क्षेत्र एवं परिकल्पित दूरी तथा वितरण विष्लेषण के तुलनात्मक अध्ययन से ज्ञात होता है कि रेवतीपुर विकासखण्ड में जनसंख्या आकार सेवा केन्द्रों के वितरण में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है। जमानियां एवं भदौरा विकासखण्ड में स्थित बड़े सेवा केन्द्रों जैसे–जमानियां, भदौरा, उसिया, सेवराई, दिलदारनगर, वारा एवं गहमर के विकास के कारण अन्य छोटे सेवा केन्द्रों का विकास नहीं हो पाया है। फलस्वरुप इन क्षेत्रों में बडे. सेवा केन्द्रों के विकास ने छोटे सेवा केन्द्रों के विकास को अवरुद्ध कर दिया है।

सेवा केन्द्रों के वितरण प्रतिरूप को प्रभावित करने वाले कारक–किसी भी क्षेत्र में सेवा केन्द्रों के उद्भव विकास एवं वितरण प्रतिरूप के निर्धारण में प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक कारकों का प्रभावी योगदान होता है। क्षेत्र में सेवा केन्द्रों के वितरण प्रतिरूप को प्रभावित करने वाले कारक को निम्न वर्गो में रखा जा सकता है।

(1) प्राकृतिक कारक–प्राकृतिक कारकों के अन्तर्गत उच्चावच, जल प्रवाह प्रणाली, मिट्टी की उर्वरता, जल की सुलभता, जलवायु, बाढ़ एवं सूखा सम्मिलित है। क्षेत्र मध्य गंगा के समतल मैदानी भाग में स्थित है। यहां भूमि की समतलता ने सेवा केन्द्रों के विकास हेतु आदर्श दशाएं प्रस्तुत की हैं। समतल भूमि, उपजाऊ मिट्टियों की प्राप्यता, जल की सुलभता एवं उत्तम जलवायु ने आदि काल से ही मानव को मनमोहित किया है। फलस्वरूप क्षेत्र में आदि काल से ही ग्रामीण व नगरीय अधिवासों का विकास हुआ। प्राचीन काल में जब रेल व सड़क परिवहन तन्त्र का विकास नहीं हुआ था। तब यहां की दक्षिणी–पूर्वी एवं दक्षिणी सीमा पर गंगा नदी द्वारा जल यातायात की सुविधा के कारण सेवा केन्द्रों का उद्भव एवं विकास हुआ।

(2) सांस्कृतिक कारक– सेवा केन्द्र सांस्कृतिक भूदृश्य के प्रधान अंग होते हैं। ये किसी भी क्षेत्र के भूवैन्यासिक संगठन के प्रधान अंग होते हैं। किसी भी क्षेत्र में भू–वैन्यासिक संगठन के निर्माण में नगरीय केन्द्रों अथवा सेवा केन्द्रों अथवा अधिवासों का वहां के भूमि उपयोग के संगठन का प्रमुख योगदान होता है। अतः किसी भी क्षेत्र के सेवा केन्द्रों के उद्भव, विकास एवं वितरण में वहाँ के सांस्कृतिक कारकों का प्रभावी योगदान होता है, जिन्हें अध्ययन की सुविधा हेतु निम्न प्रकार से लिपिबद्व किया जा सकता है।

(i) **जनसंख्या**– जनसंख्या के वितरण, मानव अधिवास एवं सेवा केन्द्रों के वितरण में उच्च घनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है। जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करने वाले स्थानीय कारक यथा–धरातल, जलवायु, मिट्टी, बाढ़, जलप्लावन एवं परिवहन तन्त्र सेवा केन्द्रों के विकास हेतु उत्तरदायी होते हैं। क्षेत्र में जनसंख्या एवं सेवा केन्द्रों के वितरण में समानता पायी जाती है। सघन जनसंख्या वाले क्षेत्रों में सेवा केन्द्रों की अधिकता है जबकि कम जनसंख्या वाले क्षेत्रों में इनकी संख्या कम पायी जाती है। जनसंख्या का वितरण गंगा नदी के दक्षिण में जलोढ़ मिट्टी वाले क्षेत्र में मेखला के रूप पायी जाती है। पश्चिम से पूर्व की ओर मध्यवर्ती भाग में जनसंख्या का वितरण सघनतर होता गया है। इस प्रकार सेवा केन्द्रों का वितरण भी पश्चिम से पूर्व की ओर सघन होता गया है। फलतः सघन जनसंख्या घनत्व ने सेवा केन्द्रों की संख्या अधिक बढ़ाने व उनके विकास को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। संक्षेप में जनसंख्या घनत्व व सेवा केन्द्रों की संख्या में उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

(ii) **भूमि का उपजाऊपन एवं कृषि सघनता–** भूमि की उत्पादकता एवं कृषि की सघनता अधिवासों के उद्भव, विकास एवं वितरण को प्रभावित करती है। क्षेत्र के मध्य एवं पूर्वोत्तर भाग की भूमि अधिक उपजाऊ है, जिससे इन क्षेत्रों में अधिवासों का जमाव अधिक हुआ है। इस क्षेत्र की जनसंख्या का विभिन्न सेवाओं की पूर्ति हेतु सेवा केन्द्रों का विकास अधिक हुआ है वहीं दूसरी तरह जनपद के दक्षिणी भाग में कर्मनाशा नदी के क्षेत्रों में बाढ़ निर्मित मैदानों में सेवा केन्द्रों की भी कमी पायी जाती है। स्पष्ट है कि क्षेत्र के सभी भागों में कृषि योग्य भूमि पायी जाती है।

(iii) **परिवहन तन्त्र**– परिवहन तन्त्र किसी भी क्षेत्र के सामाजिक आर्थिक रूपान्तरण में आधारीय भूमिका निभाता है। यह क्षेत्र की सभ्यता को निर्धारित करता है। मानव अधिवासों व सेवा केन्द्रों के विकास हेतु आदर्श दशाओं को उपस्थित करता है। किसी देश के नगरीय केन्द्रों एवं ग्रामीण क्षेत्रों की गतिशीलता निर्धारित करते हुए उनके विकास को निर्धारित करती है। सड़कें एवं उनके संगम स्थल विकास बिन्दुओं और नगरीय केन्द्रों के विकास में ध्रुवीय भूमिका निभाते हैं। परिवहन तन्त्र का सेवा केन्द्रों के विकास में आधारीय योगदान होता है। सेवा केन्द्र एवं परिवहन तन्त्र एक ही आर्थिक प्रक्रिया के दो समान पहलू है। सेवा केन्द्र अपने पृष्ठ प्रदेशों से परिवहन मार्गो द्वारा जुड़े होते है। परिवहन मार्गो पर बस स्टाप, रेलवे स्टेशन मिलान बिन्दुओं एवं नये मार्गो के सन्धि स्थलों पर सेवा क्रिया प्रारम्भ हो जाती है। क्षेत्र के सभी सेवा केन्द्र किसी न किसी परिवहन मार्ग के सहारे ही स्थापित है जो सन् 1970 के बाद परिवहन मार्गो के विकास के बाद अस्तित्व में आये। प्राचीन काल में नदी परिवहन ही आवामगन का प्रमुख साधन था, जिसके तटों पर स्थित अधिवास ही सेवा केन्द्रों के रूप स्थापित हुए। इस प्रकार के सेवा केन्द्रों में वारा, देवैथा, देवल, वीरपुर एव जमानियां आदि का उल्लेख किया जा सकता है। वर्तमान समय में परिवहन की सुविधा के विकास के कारण क्षेत्र में सर्वत्र सेवा केन्द्रों का विकास तीव्र गति हो रहा है।

(iv) **प्रशासनिक कारक**–प्रशासनिक केन्द्र स्वभावतः सेवा क्रिया को आकर्षित करते है। क्षेत्रों में तत्कालीन राजाओं, जमीदारों ने अपने प्रशासनिक मुख्यालयों पर सेवा केन्द्रों को स्थापित किया। उदाहरणार्थ दिलदारनगर एवं जमानियां आदि सेवा केन्द्र है।

यह प्रक्रिया आज भी तहसील मुख्यालयों, सामुदायिक विकासखण्डों एवं पुलिस थानों पर सेवा केन्द्रों की स्थापना को प्रभावित करती हैं। इन तथ्यों के प्रमाण स्वरूप दिलदारनगर, गहमर, सुहवल, रेवतीपुर, भदौरा एवं जमानियां आदि सेवा केन्द्रों का उल्लेख किया जा सकता है, जिनमें से जमानियां में सघन आधिवासों के कारण प्रशासनिक कार्यालयों के वाहय क्षेत्रों में सेवा केन्द्र निर्मित किये गये।

(v) **ऐतिहासिक एवं धार्मिक कारक**– धार्मिक केन्द्रों पर देवी–देवताओं के दर्शन एवं पूजन हेतु क्षेत्रीय जनता का एकत्रीकरण होता रहता है। इन धार्मिक, ऐतिहासिक व सांस्कृतिक स्थलों की मात्रा प्रायः बहुद्देशीय हो जाती हैं। धार्मिक केन्द्रों की उपयोगिताओं के समूहन से विक्रेतागण आकर्षित होते है, साथ ही ऐतिहासिक समय से ही स्थित केन्द्रों के चतुर्दिक सेवा केन्द्रों की स्थापना हो जाती है। अध्ययन क्षेत्र में प्राचीन काल से ऐतिहासिक नगर रहा है। उदाहण के लिए दिलदारनगर, जमानियां, नवली आदि सेवा केन्द्रों का उल्लेख किया जा सकता है। यहा भदौरा में षिवमन्दिर एवं बाबा किनाराम की मठ, दिलदारनगर में राजा नल एवं दमयन्ती का किला, जमानियां में जमदग्नि ऋषि के आश्रम के कारण इन क्षेत्रों में हिन्दू धर्मावलम्बी का संकेद्रण अधिक पाया जाता है जवकि मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में मुस्लिम जनसंख्या का संकेद्रण प्राचीन मस्जिदों ने जनसंख्या के समूहन को अपनी ओर आकर्षित कर अधिवासित केन्द्रों को सेवा केन्द्रों के रूप में परिवर्तित कर दिया है।

स्पष्ट है कि सेवा केन्द्रों के वितरण प्रतिरूप को प्रभावित करने में मुख्य रूप से उस क्षेत्र के प्राकृतिक सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, प्रशासनिक व राजनैतिक तत्वों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। प्रभावी कारकों में क्षेत्रीय विविधता के कारण वितरण प्रतिरूप में अन्तर पाया जाना स्वाभाविक है। सेवा केन्द्रों के वितरण प्रतिरूप सम्बन्धी एक प्रमुख सामान्य तथ्य यह सामने आया है कि इनकी स्थानिक दूरी को नियंत्रित करने वाला प्रमुख तत्व उनका आकार है। बड़े आकार के सेवा केन्द्रों की संख्या कम व उनके बीच की दूरी अधिक पायी जाती है, जबकि छोटे आकार के सेवा केन्द्रों की संख्या अधिक व उनके बीच की दूरी कम होती है।

REFERENCES

1.Yadav, A.K. (2013) :'Ghazipur District (U.P.) in Hierarchicy of Service Centres; Panchatatva, Vol-2 No.-2 pp.31-37
2. Yadav,A.K.. (2014) : Ditribution of Service : A Case Study of Ghazipur Tahsil, Ghazipur District (U.P.), Research Journal & Social Science 2014, 5(4) 405-408, pp.244-408.
3. Galpin, C.S.(1918) : Rural life New Yark P.87.
4. Christallar, W. (1933): Central places in southern Germany, translated by C.W.Baskin, Prentice Hall Inc. Englewood clifts New Jersey (1966)
5. Mishra, R.P.(1983) : Contributions to India Geography-Concepts and Approaches, Heritage Publisher New Delhi, P.P. 223-246.
6. Pandey, J.N. (1972) :Distribution of Rural Settlement in lower Ganga-Gomti Doab,U.B.B.P. Vol XIII, No.2 pp. 101 – 115.
7. Sinha, M.K.& Yadav, A.K. (2012) : Spatial Distribution of Service Centres in Ghazipur District. U.P., Educational Waves Vol VIII. No.2 pp. 61-66
8. Clark , P.T & F.C. Evans(1954): Distance of Nearest Neighbour as Ecology 35, pp. 445-453
9. Mather, E.C. (1944): A Linear Distance Map of farm Population in the U.S.,A.A.A.G. pp-4.
10. Dacey,M.F (1962): Analysis of Central Place and Point Pattern By a Nearest Neiobour Method Lung studies in Geography Seeries, B.Human Geography 24P.P. 55-75.
11. King, L.J.(1962): A Quntitative Expression of the Pattern of Urban Settlements in selected areas of the united states, Tizdschrift in Voor Economische in social Geographic 53. pp. 1-7.